year 1994-95, sugarcane production in Maharashtra is estimated at 370.00 lakh tonnes (Advance). The installed capacity of sugar mills in Maharashtra is 2,11,747 tonnes cane per day. Taking an average duration of 150 days, he requirement of cane for sugar mills in Maharashtra would be of the order of 317.62 lakh tonnes. Further, in order to increase the cane production in the area of operation of sugar factories, financial assistance at concessional rate of interest is being provided from the Sugar Development Fund.

(c) No letter of intent has been issued during the current sugar year *1994-95 (October-September) so far for* setting up of new sugar mills.

देश में चीनी मिलों की स्थापना

516. **श्रीमती सुषमा स्वराज :**
श्री राम जेठमलानी :

क्या **खाद्य** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार ने देश में चीनी के उत्पादन को प्रोत्साहन देने के लिए नई चीनी मिलें स्थापित करने और पुरानी मिलो के विस्तार हेतु लाइसेंस जारी किए है ;

(ख) यदि हां, तो वर्ष 1991–92, 1992–93 मे नई मिलें स्थापित करने और पुरानी मिलों का विस्तार करने हेतु कुल कितने लाइसेंस जारी किए गए और उनकी उत्पादन क्षमता कितनी है ;

(ग) क्या सरकार ने अक्तूबर, 1994 में देश में स्थापित चीनी मिलों की उत्पादन क्षमता का अनुमान लगाया है ;

(घ) यदि हां, तो इनकी क्षमता कितनी है और वर्ष 1994–95 में देश में कितनी मात्रा में गन्ना उपलब्ध होने की संभावना है ; और

(ङ) क्या देश मे स्थापित चीनी त्पादन क्षमता का भरपूर उपयोग करने के लिए पर्याप्त मात्रा में गन्ना उपलब्ध है ; यदि नहीं, तो गन्ने की कितनी मात्रा की आवश्यकता होगी ?

खाद्य मंत्रालय के राज्य म(कल्प नाथ राय) : (क) और (ख) जी, हां । 1991–92 और 1992–93 चीनी वर्ष (अक्तूबर–सितंबर) के दौरान नई चीनी मिल स्थापित करने के लिए एक आशय-पत्र और मौजूदा इकाईयों के विस्तार हेतु 24 आशय-पत्र जारी किए गए हैं । इन इकाइयो की वार्षिक चीनी उत्पादन क्षमता 5.7447 लाख टन होगी ।

(ग) से (ङ) देश में 31–10–94 तक चीनी मिलों की लाइसेंसशुदा क्षमता 116.2174 लाख टन की संस्थापित क्षमता सहित वार्षिक चीनी उत्पादन के हिसाब से 205.1668 लाख टन थी । वर्ष 1994–95 के दौरान 2456.09 लाख टन गन्ना उत्पादन का अनुमान लगाया गया है । चीनी उत्पादन क्षमता के उपयोग के लिए देश में गन्ने की पर्याप्त उपलब्धता है । तथापि, चीनी उत्पादन के लिए उपलब्ध होने वाली गन्ने की मात्रा उसके अन्य मीठा करकों की और विपथन पर निर्भर करेगी ।

चीनी का उत्पादन

517. **श्री राम जेठमलानी :**
श्रीमती सुषमा स्वराज :

क्या **खाद्य** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार ने पिराई वर्ष 1994–95 के दौरान चीनी के उत्पादन की मात्रा का अनुमान लगाया है ;

(ख) यदि हां, तो यह मात्रा कितनी है और गत वर्ष 1993–94 (सितम्बर–अक्तूबर) में देश में कुल कितनी मात्रा में चीनी का उत्पादन किया गया ;

(ग) 30 सितम्बर, 1993 की स्थिति के अनुसार चीनी का शेष भंडार

कितना था और 30 सितम्बर, 1994 की स्थिति के अनुसार देश में चीनी का कितना भंडार था ; और

(घ) वर्ष 1993–94 (सितम्बर, 1993 से अक्तूबर, 1994 तक) के दौरान चीनी की अनुमानत: कुल कितनी खपत हुई और सरकार द्वारा वर्ष 1994–95 के दौरान चीनी की कुल कितनी खपत का अनुमान लगाया गया है ?

खाद्य मंत्रालय के राज्य मंत्री (श्री कल्प नाथ राय) : (क) और (ख) जी, हां। नागरिक पूर्ति, उपभोक्ता मामले एवं सार्वजनिक वितरण मंत्रालय द्वारा गठित ग्रुप ने 1993–94 (अक्तूबर–सितम्बर) मौसम के दौरान 98.00 लाख टन की तुलना में 1994–95 के दौरान 118 लाख टन चीनी उत्पादन का अनुमान लगाया है ।

(ग) 30 सितम्बर, 1993 और 1994 को देशी चीनी के स्टॉक क्रमश: 31.13 लाख टन और 18.33 लाख टन थे ।

(घ) 1993–94 मौसम के दौरान चीनी की खपत 111.37 लाख टन थी और 1994–95 मौसम के दौरान अनुमानित खपत, पी०डी०एस० के लिए आयातित चीनी सहित लगभग 118 लाख टन होगी। उक्त आंकड़ों में ओ० जी० एल० के तहत प्राइवेट पार्टियों द्वारा आयातित चीनी शामिल नहीं है ।

देश में गेहूं और चावल की कीमतें

5.18. **श्रीमती सुषमा स्वराज :**
श्री राम जेठमलानी :

क्या खाद्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार का ध्यान दिनांक 31 अक्तूबर, 1994 के दैनिक "आब्जर्वर" में "हाई डोमेस्टिक प्राइजेज हिट व्हीट एक्सपोर्ट" शीर्षक के अन्तर्गत प्रकाशित समाचार की ओर दिलाया गया है ;

(ख) क्या यह सच है कि देश में खाद्यान्नों विशेषकर गेहूं और चावल की कीमतें अंतर्राष्ट्रीय बाजार की तुलना में अधिक हो गई है ;

(ग) यदि हां, तो अगस्त से अक्तूबर, 1994 तक देश में और अंतर्राष्ट्रीय बाजार में गेहूं और चावल की कीमतें क्या-क्या थीं ;

(घ) क्या यह भी सच है कि सरकार ने खाद्यान्नों के प्रचुर भण्डार को ध्यान में रखते हुए इसके निर्यात का निर्णय लिया है ;

(ङ) यदि हां, तो निर्यात के लिए कितनी मात्रा निर्धारित की गई है और भारतीय खाद्य निगम की गेहूं और चावल इकोनोमिक कीमतों में भी वृद्धि हुई है ; और

(च) यदि हां, तो वर्ष 1991–92, 1992–93 और 1993–94 में इनकी कीमतें क्या थी और वर्ष 1994–95 में कितनी कीमतें होने की सम्भावना है ?

खाद्य मंत्रालय के राज्य मंत्री (श्री कल्प नाथ राय) : (क) जी, हां ।

(ख) और (ग) मूल कृषि खाद्य पदार्थों के लिए अन्तर्राष्ट्रीय बाजार पर केवल प्रधान बाजारों में ऊंचे व्यवधानों का ही दबाव नहीं है बल्कि इस पर विकसित देशों द्वारा मंजूर की गई निर्यात सब्सिडी का भी दबाव है । सब्सिडियों के बिना विश्व मूल्य मौजूदा मूल्यों से अधिक होंगे और भारतीय अनाज के निर्यात में निर्यात संबंधी प्रतिस्पर्धा में वृद्धि करेंगे ।

बासमती चावल के भारतीय निर्यात अन्तर्राष्ट्रीय रूप से प्रतिस्पर्धी है और इनमें पिछले कुछ वर्षों में सतत वृद्धि हो रही है। तथापि, फिलहाल भारतीय गैर-बासमती उत्तम चावल और गेहूं अन्तर्राष्ट्रीय रूप से बहुत अधिक प्रतिस्पर्धी नहीं हैं ।

अगस्त और अक्तूबर, 1994 में देश में और अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में गेहूं और चावल की तुलनात्मक किस्मों के मूल्य